Shri Mandir

हनुमान् चालीसा

Hindi Hanuman Chalisa

,

SHRI HANUMAN CHALISA, AARTI
AND
OTHER STUTIES (PRAYERS)

Hindu Mandir Society of San Diego, California
9474 # L Black Mountain Rd,
San Diego, CA 92126
Tel: 858-566-5644

"Compliments of Shri Mandir"

मंगळा चरण

लोकाभिरामं रणरंगधीरं, राजीव नेत्रं रघुवंशनाथाम ।
कारुण्य रूपं करुणाकरंतं, श्रीरामचंद्रं शरणं प्रपद्ये ॥
अतुलितबलधामं हेमशैलाभदेहं दनुज वन कृशानुं ज्ञानिनामग्रगण्यम ।
सकलगुणनिधानं, वानराणामधीशं रघुपति प्रियभक्तं वातजातं नमामि ॥
मनोजवं मारुततुल्यवेगं जितेंद्रियं बुद्धिमतां वरिष्ठम ।
वातात्मजं वानरयूथमुख्यं श्री राम दूतं शरणं प्रपद्ये ॥

बुधि बलं यशोधैर्यं निर्भयत्वं अरोगता ।
अजाढ्यं वाक्पटुत्वं च हनुमत स्मरणात भवेत ॥

चोपाई

राजीव नयन धरे धनु सायक । भक्त विपति भंजन सुख्दायक ॥
मंगळ भवन अमंगळ हारी । द्रव्हु सो दशरथ अजिर बिहारी ॥
दीन् दयाल बिरिदु संभारी । हरहु नाथ मम संकट भारी ॥
जनकसुता जगजननी जानकी । अतिशय प्रिय करुणानिधान् की ॥
ताके जुग्पद कमल मनावऊँ । जासु कृपा निर्मल मति पावऊँ ॥
महबीर बिन्वऊँ हनुमाना । राम जासु जश आप बखाना ॥

सोरठा

प्रन्वऊँ पवनकुमार, खल्बल पावक ज्ञान घन ।
जासु हृदय आगार, बस्हिं राम शर चाप्धर ॥
कुंद इंदु सम देह, उमारमन करुणा अयन ।
जाहि दीन पर नेह, करहुं कृपा मर्दन मयन ॥

चोपायी

सियाराममय सब जग जानि । करहुं प्रनाम जोरि जुग पानि ॥
जय जय गिरिवर राज किशोरी । जय महेश मुख चंद्र चकोरि ॥

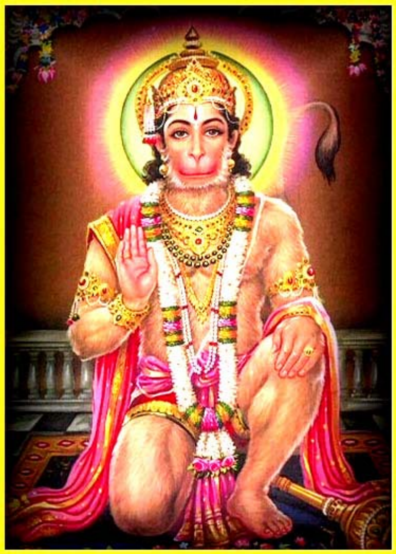

मंगळ मूरुति स्तुति

मंगल मूरुति मारुति नंदन, सकल अमंगळ मूल निकंदन
पवन तनय संतन हित्कारी, हृदय विराजत अवध बिहारि.
मात पिता गुरु गणपति शारद, शिवा समॆत शंभु शुक नारद
चरण कमल बंधऊ सब काहु, दॆहु रामपद नॆहु निबाहु.
जै जै जै हनुमान गॊसाई, कृपा करॊ गुरुदॆव कि नाई
बंदुऊ राम लखन बैदॆहि, यह तुलसी कॆ परम सनॆही

मंगळ मूरुति मारुति नंदन, सकल अमंगळ मूल निकंदन.
सियावर रामचंद्र की जै। पवन सुत हनुमान की जै।
उमा पति महदॆव की जै॥

हनुमान चालिसा

दोह

श्रीगुरु चरण सरोज रज, निज मन मुकुर सुधारि।
वरनऊं रघुवर विमल जसु, जो दायक फल चारि॥

बुद्धि हीन तनु जानिके, सुमिरौ पवनकुमार।
बल बुद्धि विद्या देहु मोहि, हरहु कलेस विकार॥

सियावर रामचंद्र की जय। पवन सुत हनुमान की जय।
उमा पति महादेव कि जय।

चोपाई

जय हनुमान ज्ञान गुण सागर । जै कपीस तिहुलोक उजागर॥
राम दूत अतुलित बलधामा । अंजनि पुत्र पवनसुत नामा॥

महावीर विक्रम बजरंगि । कुमति निवार सुमति के संगि॥
कंचन वरन विराज सुबेसा । कानन कुंडल कुंचित केशा॥

हाथ वज्र और ध्वजा बिराजै । कांधे मूंज जनेऊ साजै॥
शंकर सुवन केसरी नंदन । तेज प्रताप महा जग वंदन॥

विद्यावान गुणी अति चातुर । राम काज करिबे को अतुर ॥
प्रभु चरित्र सुनिबे को रसिया । राम लखन सीता मन बसिया ॥

सूक्ष्म रूप धरि सियहि दिखावा । विकट रूप धरि लंक जरावा ॥
भीम रूप धरि असुर संहारे । रामचंद्र के काज संवारे ॥

लाय सजीवन लखन जियाये । श्रीरघुबीर हरषि उर लाये ॥
रघुपति कीन्ही बहुत बडाई । तुम मम प्रिय भरतहि सम भाई ॥

सहस वदन तुम्हरो जस गावै । अस कहि श्रीपति कंठ लगावै ॥
सनकादिक ब्रह्मादि मुनीसा । नारद शारद सहित अहीसा ॥

जम कुबेर दिक्पाल जहां ते । कवि कोबिद कहि सके कहां ते ॥
तुम उपकार सुग्रीवहि कीन्हा । राम मिलाय राज पद दीन्हा ॥

तुम्हरो मंत्र विभीषन माना । लंकेश्वर भये सब जग जाना ॥
जुग सहस्र योजन पर भानू । लील्यो ताहि मधुर फल जानू ॥

प्रभु मुद्रिका मेलि मुख माही । जलधि लांघि गये अचरज नाही ॥
दुर्गम काज जगत के जेते । सुगम अनुग्रह तुम्हरे तेते ॥

राम दुआरे तुम रखवारे । हो तन आज्ञा बिनु पैसारे ॥
सब सुख लहै तुम्हारी सरना । तुम रक्षक काहु को डरना ॥

आपन तेज सम्हरो आपै । तीनो लोक हांक ते कांपै ॥
भूत पिशाच निकट नहि आवै । महाबीर जब नाम सुनावै ॥

नासै रोग हरे सब पीरा । जपत निरंतर हनुमत बीर ॥
संकट ते हनुमान धुडावै । मन क्रम बचन ध्यान जो लावै ॥

सब पर राम तपस्वी राजा । तिन् के काज सकल तुम साजा ॥
और मनोरथ जो कोयि लावै । सोयि अमित जीवन फल पावै ॥

चारो जुग परताप तुम्हारा । है परसिद्ध जगत उजियारा ॥
साधु संत के तुम रख्वारे । असुर निकंदन राम दुलारे ॥

अष्ट सिद्धि नौ निधि के दाता । अस बर दीन जान्की माता ॥
राम रसायन तुम्हरे पासा । सदा रहो रघुपति के दासा ॥

तुम्हरो भजन राम् को पावै । जनम जनम के दुख बिस्रावै ॥
अंत काल रघुवर पुर जायी । जहां जन्म हरि भक्त कहायी ॥

और देवता चित्त न धरई । हनुमत सर्व सुख करई ॥
संकट कटै मिटै सब पीरा । जो सुमिरै हनुमत बलबीर ॥

जै जै जै हनुमान गोसाई । कृपा करहु गुरु देव कि नाई ॥
जो सत बार पाठ कर कोयी । छूटहि बंदि महा सुख होयी ॥

जो यह पडै हनुमान चालिसा । होय सिद्धि साखी गौरीसा ॥
तुल्सीदास सदा हरि चेरा । कीजै नाथ हृदय मह डेरा ॥

दोहा

पवन तनय संकट हरन । मंगळ मूरति रूप ।
राम लखन सीता सहित । हृदय बसहु सुर भूप ॥

सियावर रामचंद्र की जै । पवन सुत हनुमान की जै ।
उमा पति महदेव की जै ॥

संकट मोचन हनुमाना अष्टक

बाल समय रवि भक्षि लियो तब, तीनहुं लोक भयो अधियरो ।
ताहिसों त्रास भयो जग को यह संकट काहु सो जात न टारो ॥

देवन आनि करी विनती, तब छाडि दियो रवि कष्ट निवारो ।
को नहिन जानत है जग मे, कपि संकट मोचन नाम तिहारो ॥

बालि की त्रास कपीस बसै गिरि, जात महाप्रभु पंथ निहारो ।
चौकि मह मुनि साप दियो तब, चाहिय कौन बिचार बिचारो ॥

कै द्विज रूप लिवाय महाप्रभु, सो तुम दास के सोक निवारो ।
को नहि जानत है जग मे, कपि संकट मोचन नाम तिहारो ॥

अंगद के संग लेन गए सिय, खोज कपीस यह बैन उचारो ।
जीवत ना बचिहौ हम् सो जु, बिना सुधि लाये इहान पगु धारो ॥

हेरि थके तट सिंधु सबै तब, लाय सिया सुधि प्रान उबारो ।
को नहि जानत है जग मे, कपि संकट मोचन नाम तिहारो ॥

रावण त्रास दयी सिय को सब, राक्षसि सौ कहि शोक निवारो ।
ताहि समय हनुमान महाप्रभु, जय महा रजनिचर मारो ॥

चाहत सिय आशोक सोन आगि सु, दै मुद्रिका शोक निवारो ।

को नहि जानत है जग में, कपि संकटमोचन नाम तिहारो ॥

बान लग्यो उर लाक्ष्मन के तब, प्रान तजे सुत रावण मारो ।
लै गृह वैद्य शुसेन समेत, तबै गिरि द्रोन सु वीर उपारो ॥

आनि संजीवन हाथ दयी तब, लाक्ष्मन के तुम प्रान उबारो ।
को नहिन जानत है जग में, कपि संकट मोचन नाम तिहारो ॥

रावण जुधृ अजान कियो तब, नागि कि फाँस सबै सिर डारो ।
श्री रघुनाथ समेत सबै दल, मोह भयो यह संकट भारो ॥

आनि खगेस तबै हनुमान जु, बंधन काटि सुत्रास निवारो ।
को नहि है जग मे, कपि संकटमोचन नाम तिहारो ॥

बंधु समेत जबै आहिरावण, लै रघुनाथ पाताल सिधारो ।
देविहि भलि बिधि सो बलि, देउ सबै मिलि मंत्र बिचारो ॥

जाय सहाय भयो तब ही, अहिरावण सैन्य समेत संहारो ।
को नहि जानत है जग मे, कपि संकटमोचन नाम तिहरो ॥

काज किये बड़ देवन के तुम, वीर महाप्रभु देखि बिचारो ।
कौन सो संकट मोर गरीब को, जो तुमसो नहि जात हे टारो ॥

बेगि हरो हनुमान महाप्रभु, जो कछु संकट होय हमारो ।
को नहि जानत है जग मे, कपि संकटमोचन नाम तिहारो ॥

दोहा

लाल देह लाली लसे, अरु धरि लाल लंगूर ।
वज्र देह दानव दलन, जय जय जय कपि सूर ॥

सियावर राम्चंद्र की जय
पवन सुत हनुमान की जय
उम पाति महदेव की जय

श्री राम स्तुति

श्रीरामचंद्र कृपालु भजु मन हरण भव भय दारुणम. ।
नवकंज लोचन कंज– मुख, कर– कंज पद कंजारुणम. ॥
कंदर्प अगणित अमित छबि नव नील नीरज सुंदरम, ।
पट पीत मानहु तडित रुचि शुचि नौमि जनक सुतावरम. ॥
श्रीराम, श्रीराम, श्रीराम, श्रीराम

भजु दीन बंधु दिनेश दानव दैत्यवंश निकंदनम ।
रघुनंद आनंदकंद कोसलचंद दशरथ नंदनम ॥
सिर मुकुट कुंडल तिलक चारु उदार अंग विभूषणम ।
अजान ुभुज शर चाप धर संग्राम जित खरदूषणम ॥
श्रीराम, श्रीराम, श्रीराम, श्रीराम

इति वदति तुलसीदास शंकर शेष मुनि मनरंजनम ।
मम हृदय कंज निवास कुरु, कामादि खलदल गंजनम ॥
मनु जाहि राचेउ मिलहि सोबरु सहज सुंदर सांवरो ।
करुणा निधान सुजान सीलु सनेहु जानत रावरो ॥
श्रीराम, श्रीराम, श्रीराम, श्रीराम

ऐहि भांति गौरि असिस सुनि सिय सहित हिय हर्षि अलि ।
तुलसी भवानिहि पूजि पुनि पुनि मुदित मन मंदिर चली ॥

श्री रामचंद्र कृपालु भजु मन, हरन भव भय दारुणम.
श्रीराम, श्रीराम, श्रीराम, श्रीराम

सोरठा

गौरि अनुकूल सिय हिय हरषु न जाहि कहि ।
मंजुल मंगळ मूल बाम अंग फरकन लगे॥
सियावर रामचंद्र की जै । पवन सुत हनुमान की जै । उमापति महादेव की जै ॥

हनुमान आरति

आरति कीजै हनुमान लला की । दुष्टदलन रघुनाथ कला की ॥
जाके बल से गिरिवर कांपे । रोग दोष जाके निकट न जांपै ॥
अंजनि पुत्र महा बलदायी । संतन के प्रभु सदा सहाई ॥
दे बीरा रघुनाथ पठाये । लंका जारि सीया सुधि लाये ॥
लंक सो कोट समुद्र सी खायी । जात पवनसुत बार न लायी ॥
लंका जारि असुर संहारे । सियाराम्जी के काज संवारे ॥
लक्ष्मण मूर्छित पढे सकारे । आनि संजीवन प्रान उबारे ॥
पैठी पताल तोरि जम कारे । अहिरावन की भुजा उखारे ॥
बायेन भुजा असुर दल मारे । दाहिने भुजा संत जन तारे ॥
सुर नर मुनि आरती उतारे । जै जै जै हनुमान उचारे ॥
कंचन थार कपूर लौ छायी । आरति करत अंजना माई ॥
जो हनुमान (जी)की हरति गावै । बसि वैकुंठ पर्‍म पद पावै ॥

आदौ राम तपोवनादि गमनं, हत्वा मृगं कांचनम ।
वैदेही हरणं, जटायु मरणं, सुग्रीव संभाषणम ॥
वालि निर्दलनं, समुद्र तरणं, लंकापुरी दाहनम ।
पश्चाद्रावण कुंभकर्णादि हननं, एतदधि रामायणम ॥

॥ श्री पवनपुत्रार्पणमस्तु ॥

रुद्राष्टकं

नमामीशमीशान निर्वानरूपं । विभुं व्यापकं ब्रह्म वेदस्वरूपं ॥
निजं निर्गुणं निर्विकल्पं निरीहं । चिदाकाशमाकाशवासं भजेहम ॥

निराकारमोंकारमूलं तुरीयं । गिरा ज्ञान गोतीतमीशं गिरीशं ॥
कराळं महकाल कालं कृपालं । गुणागार संसारपारं नतोहम ॥

तुषाराद्रि संकाश गौरं गभीरं । मनोभूत कोटि प्रभा श्रीशरीरं ॥
स्फुरन्मौलि कल्लोलिनी चारु गंगा । लसद्भालबालेंदु कंठे भुजंगा ॥

चलत्कुंडलं भ्रू सुनेत्रं विशालं । प्रसन्नाननं नीलकंठं दयालुम ॥
मृगाधीशचर्मांबरं मुंडमालं । प्रियं शंकरं सर्वनाथं भजामि ॥

प्रचंडं प्रकृष्ट प्रगल्भं परेशं । अखंडं अजं भानुकोटीप्रकाश ॥
त्रयः शूल निर्मूलनं शूलपाणिं । भजेहं भावनीपतिं भावगम्य ॥

कळातीत कल्याण कल्पांतकारी । सदा सज्जनानंददाता पुरारी ॥
चिदानंद संदोह मोहापहारी । प्रसीद प्रसीद प्रभो मन्मथारी ॥

न यावद उमानाथ पादारविंदं । भजंतीह लोके परे वा नराणाम
न तावत्सुखं शांति संतापनाशं । प्रसीद प्रभो सर्वभूताधिवासम ॥

न जनामि योगं जपं नैव पूजां । नतोहं सदा सर्वदा शंभु तुभ्यम ॥
जरा जन्म दुःखौघ तातप्यमानं । प्रभो पाहि आपन्नामीश शंभो ॥

श्लोक

रुद्राष्टकमिदं प्रोक्तं विप्रेण हरतोषये ।
रुद्राष्टकमिदं प्रोक्तं विप्रेण हरतोषये ।
ये पठंति नरा भक्त्या तेषां शंभुः प्रसीदति ॥